४. सौहार्द-सौमनस्य

- *जहीर कुरैशी*

परिचय

जन्म : १९५०, गुना (म.प्र.)
परिचय : आपकी रचनाएँ, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, पंजाबी आदि भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। आपको 'इनकार्पोरेटेड सम्मान', 'गोपाल सिंह नेपाली सम्मान' प्राप्त हुए हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'एक टुकड़ा धूप', 'लेखनी के स्वप्न', 'चाँदनी का दुख', 'भीड़ में सबसे अलग', 'पेड़ तनकर भी नहीं टूटा' (गजल संग्रह) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत दोहों में जहीर कुरैशी जी ने छोटे-बड़े के भेद मिटाने, नफरत, स्वार्थ आदि छोड़ने के लिए प्रेरित किया है । आपका मानना है कि अनेकता में एकता ही अपने देश की शान है । अतः हमें मिल-जुलकर रहना चाहिए ।

कल्पना पल्लवन

'भारत की विविधता में एकता है', इसे स्पष्ट करो ।

वो छोटा, मैं हूँ बड़ा, ये बातें निर्मूल,
उड़कर सिर पर बैठती, निज पैरों की धूल ।

नफरत ठंडी आग है, इसमें जलना छोड़,
टूटे दिल को प्यार से, जोड़ सके तो जोड़ ।

पौधे ने बाँटे नहीं, नाम पूछकर फूल,
हमने ही खोले बहुत, स्वारथ के इस्कूल ।

धर्म अलग, भाषा अलग, फिर भी हम सब एक,
विविध रंग करते नहीं, हमको कभी अनेक ।

जो भी करता प्यार वो, पा लेता है प्यार,
प्यार नकद का काम है, रहता नहीं उधार ।

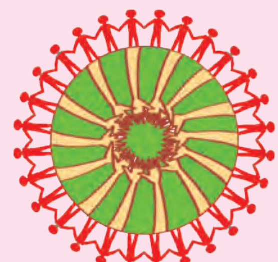

जर्रे-जर्रे में खुदा, कण-कण में भगवान,
लेकिन 'जर्रे' को कभी, अलग न 'कण' से मान ।

इसीलिए हम प्यार की, करते साज-सम्हार,
नफरत से नफरत बढ़े, बढ़े प्यार से प्यार ।

भाँति-भाँति के फूल हैं, फल बगिया की शान,
फल बगिया लगती रही, मुझको हिंदुस्तान ।

हम सब जिसके नाम पर, लड़ते हैं हर बार,
उसने सपने में कहा, लड़ना है बेकार !

कितना अच्छा हो अगर, जलें दीप से दीप,
ये संभव तब हो सके, आएँ दीप समीप ।।

---०---

शब्द वाटिका

निर्मूल = बिना जड़ की, निरर्थक
स्वारथ = स्वार्थ
सम्हार = सँभाल, सुरक्षित
जर्रा = अत्यंत छोटा कण

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :**

(१) कृति पूर्ण करो :

१. इन बातों में अलग होकर भी हम सब एक हैं –
[ ]
[ ]

२. बगिया की शान –
[ ]
[ ]

(२) कविता में इस अर्थ में प्रयुक्त शब्द लिखो :

१. दीपक = -----------
२. पुष्प = -----------
३. तिरस्कार = -----------
४. प्रेम = -----------

(३) कविता में प्रयुक्त विलोम शब्दों की जोड़ियाँ लिखो ।

भाषा बिंदु पाठों में आए अव्ययों को पहचानो और उनके भेद बताकर उनका अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन **शालेय बैंड पथक के लिए आवश्यक सामग्री खरीदने हेतु अपने विद्यालय के प्राचार्य से विद्‌यार्थी प्रतिनिधि के नाते अनुमति माँगते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखो :**

दिनांक :
प्रति,
....
....
विषय : ....
संदर्भ : ....
महोदय,
विषय विवेचन
....
....
....
....।

आपका/आपकी आज्ञाकारी,
....
(विद्‌यार्थी प्रतिनिधि)
कक्षा : ....

IZR8VN

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन 'नफरत से नफरत बढ़ती है और स्नेह से स्नेह बढ़ता है', इस तथ्य से संबंधित अपने विचार लिखो ।